2015

HINDI

[Honours]

PAPER – VI

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

खण्ड — क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15 x 2

(क) "चन्द्रगुप्त नाटक की कथावस्तु में इतिहास और कल्पना का मर्मस्पर्शी एवं प्रभावी मिश्रण हुआ है" — कथन की सारगर्भित समीक्षा कीजिए ।

(ख) सिद्ध कीजिए कि 'लहरों के राजहंस' नाटक का शिल्पविधान पूर्णतः आधुनिक है ।

(ग) हिन्दी ललित निबंधकार के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए ।

(घ) पठित निबंध के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कविता सम्बन्धी मान्यताओं की विवेचना कीजिए ।

(ङ) रंगमंचीय विशेषताओं की दृष्टि से 'अंधेर नगरी' के महत्त्व का उल्लेख कीजिए ।

(च) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' में व्यक्त लेखक के बिचारों का विवेचन कीजिए ।

खण्ड — ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4 × 5

(क) कार्नेलिया का चरित्र-चित्रण ।

(ख) 'बहुत बड़ा सवाल' नाटक की भाषा ।

(ग) श्रद्धा और भक्ति में अन्तर ।

(घ) नाटककार मोहन राकेश ।

(ङ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली ।

(च) निबंधकार विद्यानिवास मिश्र ।

(छ) 'मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य' का प्रतिपाद्य

(ज) 'अंधेर नगरी' का रूप-विधान ।

खण्ड — ग

3. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं *पाँच* की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8 × 5

(क) "सिकंदर ने भारत से युद्ध किया है और मैंने भारत का अध्ययन किया है ! मैं देखती हूँ कि यह ग्रीक और भारतीयों के अस्त्र का ही नहीं, इसमें दो बुद्धियाँ भी लड़ रही हैं । यह आरस्तू और चाणक्य की चोट है, सिकंदर और चंद्रगुप्त उनके अस्त्र हैं ।"

(ख) "लगता है मैं चौराहे पर खड़ा एक नंगा व्यक्ति हूँ जिसे सभी दिशायें लील लेना चाहती हैं और अपने को ढकने के लिए उसके पास कोई आवरण नहीं है ..... परन्तु मैं इस असहायता की स्थिति में नहीं रह सकता ।"

(ग) "स्वर्ग जाने में बूढ़ा जवान क्या ? आप तो सिद्ध हो । आपको गति-अगति से क्या ? मैं फाँसी चढ़ूँगा ।"

(घ) "जिस समाज में किसी ज्योतिष्मान शक्ति-केन्द्र का उदय होता है। समाज से भिन्न-भिन्न हृदयों में शुभ भावनायें मेघ-खण्डों के समान उड़कर तथा एक ओर एक साथ अग्रसर होने के कारण परस्पर मिलकर इतनी घनी हो जाती है कि उनकी घटा-सी उमड़ पड़ती है और मंगल की ऐसी वर्षा होती है कि सारे दुःख और क्लेश बह जाते हैं।"

(ङ) "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भाव योग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञान योग का समकक्ष मानते हैं।"

(च) "सभी चित्रकारों के पास काले, नीले, लाल आदि अनेक रंग रहते हैं ; केवल उत्तम शिल्पी ही जानता है कि किसका किस स्थान पर उपयोग करने से चित्र सुन्दर लगेगा। यह संसार भी एक महत्वपूर्ण विशाल कला-कृति है। इसको इस ढंग से सजाना कि उसकी कुरूपता और भद्दापन मिट जाय, प्रत्येक प्रकार के उपादान उचित मात्रा में उचित स्थान पर ठीक से बैठा दिये जायँ-यही सबसे बड़ी कला है। सारे मानव-समाज को सुन्दर बनाने की साधना का ही नाम साहित्य है।"

(छ) नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे बढ़ने नहीं देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है ।